1 कुहासा और किरण

(विष्णु प्रभाकर)

मेरठ, आजमगढ़, मुरादाबाद, बलिया, रायबरेली, झाँसी, सुल्तानपुर, लखीमपुर, खीरी, बदायूँ, पीलीभीत।

हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित नाटक 'कुहासा और किरण' में स्वतंत्र भारत के राजनीतिक, सामाजिक जीवन से जुड़ी समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। भारत की राजनीतिक शासन व्यवस्था, बुद्धिजीवी वर्ग (सम्पादक) तथा अर्थव्यवस्था के आधार व्यापारी वर्ग, तीनों एक-दूसरे से मिलकर अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने पद का दुरुपयोग कर रहे हैं। इस नाटक में इसी भ्रष्टाचार रूपी कुहासे का वास्तविक चित्रण किया गया है। विष्णु प्रभाकर ने इस नाटक में समाज के नेताओं, संपादकों तथा व्यापारियों के पाखण्ड एवं छद्मवेश को स्पष्ट किया है। स्वतंत्रता के उपरान्त भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, पाखण्ड एवं छद्मवेश में छाए हुए कुहासे को कृष्ण चैतन्य, विपिन बिहारी, उमेशचन्द्र जैसे स्वार्थी चरित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, तो इस कुहरे को दूर करने के लिए देश-प्रेम, कर्त्तव्यनिष्ठा, आस्था एवं नवचेतना की किरणों को अमूल्य, सुनन्दा, गायत्री जैसे चरित्रों के माध्यम से सामने लाया गया है, जो अन्याय के खिलाफ खड़े होकर कुहासे के प्रतिरूप भ्रष्टाचार को दूर करने का प्रयास करते हैं।

'कुहासा और किरण' नाटक की कथावस्तु (सारांश)

'कुहासा और किरण' नाटक की कथावस्तु कृष्ण चैतन्य नामक एक छद्म स्वतन्त्रता सेनानी एवं समाजसेवी की सामाजिक प्रतिष्ठा का चित्रण करते हुए प्रारम्भ होती है, जिसका वास्तविक नाम 'कृष्णदेव' है और जो मुलतान में हुए सन् 1942 ई. के आन्दोलन में स्वतन्त्रता सेनानियों के विरुद्ध मुखबिरी करता था। वह अपने पाखण्ड से स्वयं को 'कृष्णचैतन्य' के नाम से स्वतन्त्रता सेनानी एवं राष्ट्र प्रेमी के रूप में प्रतिष्ठित कर लेता है।

प्रथम अंक—प्रथम अंक की कहानी 'कृष्णचैतन्य' के निवास पर उनकी सेक्रेटरी सुनन्दा एवं अमूल्य के वार्तालाप से होती है। अमूल्य एक सच्चे स्वतन्त्रता सेनानी का पुत्र है। वह गरीबी एवं बेकारी में पड़ा है। सुनन्दा उसे सिफारिश करवाकर 'कृष्णचैतन्य' के यहाँ रखवाए देती है। दोनों कृष्णचैतन्य की 'षष्टिपूर्ति' के अवसर पर स्वागत की तैयारियों में व्यस्त हैं। इसी समय कृष्णचैतन्य आते हैं। दोनों उन्हें बधाई देते हैं।

अमूल्य को अपने अनिष्ट का कारण मानकर कृष्णचैतन्य शंकित रहते हैं। उन्होंने अमूल्य को विपिनबिहारी के यहाँ सम्पादक नियुक्त करवा दिया है। कृष्णचैतन्य को सरकार से 250 रुपये की पेंशन मिलती है और वे सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में दर्शकों के सामने आते हैं। प्रभा अपने उपन्यास की कथा सुनाने के लिए कृष्णचैतन्य के पास आयी। उसी समय देशभक्त डॉ. चन्द्रशेखर की विधवा अपने पेन्शन के कागजों पर हस्ताक्षर कराने आई और मुल्तान में सन् 1942 ई. के आन्दोलन तथा घटना का विवरण सुनाया, जिसे सुनकर कृष्णचैतन्य घबरा उठे। प्रभा और मालती में वाक्युद्ध होने लगा। इस संघर्ष में कृष्णचैतन्य सन्तुलन खो बैठे। वे प्राचीन घटनाओं को याद करके मानसिक रूप से भयभीत भी हो उठे। उन्हें भय हुआ कि उनकी कलई खुल न जाय।

कृष्णचैतन्य की पत्नी गायत्री अपने पति के व्यवहार एवं कपटी आचरण से विरक्त होकर अपने भाई के पास चली गई है। कृष्णचैतन्य अपने सभी सहयोगियों की कमी व दुर्बलताओं को जानता था।

द्वितीय अंक—इस अंक की घटना विपिनबिहारी के सम्पादकीय कार्यालय से सम्बन्धित है जहाँ विपिनबिहारी युवक अमूल्य को अपने काम तक सीमित रहने का निर्देश देते हैं। अमूल्य विपिनबिहारी को बतलाता है कि उसके पिता स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे। मुलतान षड्यन्त्र केस के पाँच अभियुक्तों में उनका भी नाम था। कृष्णदेव नामक विश्वासघाती मुखबिर की काली करतूत के कारण मालती के पति तथा दल के नेता डॉ. चन्द्रशेखर तथा उसके पिता को जेल की सजा भुगतनी पड़ी थी। कृष्णचैतन्य की सेक्रेटरी सुनन्दा विपिनबिहारी के पास आकर कृष्णचैतन्य की सच्ची कहानी प्रकाशित कराना चाहती है कि वास्तव में मुखबिर कृष्णदेव ही आज छद्मवेश में 'कृष्णचैतन्य' बने हुए हैं। किन्तु विपिनबिहारी इस सत्य कहानी को प्रकाशित करने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। प्रभा भी आकर देश में फैले मुखौटाधारी भ्रष्टाचारियों को बेनकाब करने का सुझाव देती है किन्तु विपिनबिहारी कृष्णचैतन्य के

विरुद्ध कुछ भी लिखने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर देते हैं। युवक 'अमूल्य' सभी के रहस्य को खोल देता है। विपिनबिहारी सभी को समझाने का असफल प्रयास करते हैं किन्तु कोई प्रभाव नहीं पड़ता। फिर 50 रिम कागज उमेशचन्द्र अग्रवाल के हाथ चोरी से बेचने के अपराध में पुलिस इन्सपेक्टर आकर अमूल्य को गिरफ्तार कर लेता है जिसके पीछे कृष्णचैतन्य की साजिश है। प्रभा और सुनन्दा कृष्णचैतन्य की धूर्तता से क्षुब्ध और क्रोधित होती हैं। अमूल्य को इतनी यातना दी जाती है कि वह आत्म-हत्या करने के लिए तैयार हो जाता है। सुनन्दा इसकी सूचना कृष्णचैतन्य की पत्नी 'गायत्री' को देती है जो अमूल्य को देखने के लिए अस्पताल जाती है और आते समय कार-ट्रक दुर्घटना के बहाने आत्म-हत्या कर लेती है। कृष्णचैतन्य, उमेशचन्द्र तथा विपिन में गुप्त वार्ता होती है। विपिनबिहारी अब आगे इस प्रकार से भ्रष्ट आचरण से मुक्ति चाहने का संकेत देता है किन्तु कृष्णचैतन्य ''मरेंगे हम तीनों, डूबेंगे हम तीनों'' कहकर बात को टाल देता है। इस बीच उसे पत्नी की दुर्घटना का समाचार मिलता है और तीनों देखने के लिए वहाँ से अस्पताल के लिए चल पड़ते हैं। आम आदमी के इस व्यंग्य के साथ कि ''आखिर इन्हें भी भगवान की याद आई। दर्द का पता लगा क्या होता है। काश .....'' और दूसरे अंक की समाप्ति होती है।

तीसरा अंक—कृष्णचैतन्य पत्नी की मृत्यु के पश्चात् अपने निवास-स्थान पर गायत्री देवी के चित्र के समीप स्तब्ध भाव से बैठे चिन्ता मग्न हैं। वे गायत्री के बलिदान की महानता और अपनी नीचता को अनुभव करते हैं। एक पत्र को जिसे उसने मृत्यु से पहले लिखा था, प्रस्तुत करते हैं। सुनन्दा इसकी सूचना पुलिस को देकर जीवित व्यक्तियों के मुखौटे उतारना चाहती है। सी0 आई. डी0 के सुपरिन्टेन्डेन्ट टमटा का अमूल्य के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु आगमन होता है। प्रभा अमूल्य को निर्दोष सिद्ध करना चाहती है। विपिनबिहारी अपने पत्रों के स्वामित्व परिवर्तन की सूचना देकर टमटा के साथ अपनी उदारता प्रदर्शित करते हैं। किन्तु अचानक कृष्णचैतन्य टमटा के समक्ष सभी रहस्यों को खोल देते हैं और स्पष्ट कर देते हैं कि मुलतान षड्यन्त्र केस का मुखबिर कृष्णदेव मैं ही हूँ। वे उमेश और विपिन को भ्रष्टाचार तथा अमूल्य को झूठे अभियोग में फँसाने के कुचक्र को भी टमटा के आगे स्पष्ट कर देते हैं। टमटा साहब सभी को अपने साथ चलने को कहते हैं। कृष्णचैतन्य अपना सर्वस्व मालती को सौंप पत्नी गायत्री देवी को प्रणाम कर टमटा के साथ चल देते हैं। आम आदमी स्टेज पर आकर 'कृष्णचैतन्य' को 'कृष्ण मन्दिर' (जेल) में भिजवाने की सूचना देता है। विपिनबिहारी और उमेशचन्द्र का सामाजिक बहिष्कार किया जाता है। अमूल्य छूट जाता है और मुखौटाधारियों को बेनकाब करने के लिए जनता को संकेत देता है। वह चोर दरवाजे तोड़ कर मगरमच्छों को देखने का निश्चय करता है तभी आम आदमी द्वारा सूचना मिलती है कि विपिन और उमेश दोनों पुलिस की गिरफ्त में आ गये हैं। अमूल्य के इस निर्णयात्मक वाक्य के साथ कि—''बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता'' नाटक का अन्त होता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. नाट्यकला की दृष्टि से 'कुहासा और किरण' की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 2. 'कुहासा और किरण' नाटक की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 3. कथानक की दृष्टि से 'कुहासा और किरण' की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 4. 'कुहासा और किरण' नाटक का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 5. 'कुहासा और किरण' नाटक की कथावस्तु/कथानक पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 6. इस नाटक के प्रमुख पात्र (नायक) अमूल्य का चरित्र-चित्रण कीजिए।

प्रश्न 7. 'कुहासा और किरण' नाटक का नायक कौन है? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ संक्षेप में बताइए।

प्रश्न 8. ''कुहासा और किरण' नाटक में सामाजिक समस्याओं और ऐतिहासिक घटनाओं का सुन्दर सामंजस्य है।'' स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 9. 'कुहासा और किरण' एक समस्यामूलक नाटक है। सिद्ध कीजिए।

प्रश्न 10. भाषा और संवाद-योजना की दृष्टि से 'कुहासा और किरण' की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 11. विष्णु प्रभाकर की नाट्य-शैली पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 12. नाटक के सर्वाधिक मार्मिक प्रसंगों पर प्रकाश डालिए।